लाल भिंडी के प्रमुख हानिकारक कीट एवं उनका एकीकृत प्रबंधन
कृषि कुंभ (नवंबर, 2022), खण्ड 02 भाग 06, पृष्ठ संख्या 51–52

लाल भिंडी के प्रमुख हानिकारक कीट एवं उनका एकीकृत प्रबंधन

धर्मपाल यादव[1], कमल यादव[1], राजेश कुमार[1], डॉ. ए. के. चौधरी[2] एवं डॉ. प्रदीप कुमार[2]
शोध छात्र[1]
[2]कीट विज्ञान विभाग, कृषि विज्ञान संस्थान
बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, झाँसी, उत्तर प्रदेश, भारत।

भिंडी भारत की एक लोकप्रिय सब्जी है जो देश के सभी क्षेत्रों में उगाई जाती है। इस समय निर्यात की जाने वाली सब्जियों में लगभग 60 प्रतिशत भिंडी निर्यात की जाती है। इसके फूलों एवं जड़ो से कई आयुर्वेदिक औषधिया भी बनाई जाती है। इसके पोधों की लम्बाई करीब 1 मीटर तक होती है। बीज उगने के लिए 27–30 डिग्री सेंटीग्रेट तापमान उपर्युक्त रहता है तथा 17 डिग्री सेंटीग्रेट से कम पर बीज अंकुरित नहीं होते। यह फसल ग्रीष्म तथा खरीफ दोनों ही ऋतुओं में उगाई जा सकती है। भूमि का पी.एच. मान 7.0 से 7.8 होना उपर्युक्त रहता है।

लाल भिंडी में लगने वाले प्रमुख हानिकारक कीट :–

1. फल एवं प्ररोह भेदक कीट की पहचान :–

इस कीट के अंडे गोलाकार एवं हल्का पीलापन लिए सफेद रंग के होते है। अंडो से निकलने वाले लार्वा हरे व भूरे रंग के होते हैं। अंडो से लार्वा को निकलने में लगभग 4 दिन लगते हैं और लार्वा को बड़े होने मे लगभग 17 से 20 दिनो का समय लगता है।

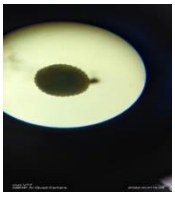

2. सफेद मक्खी कीट की पहचान :–

इस कीट के वयस्क बहुत छोटे लगभग 2.5 मि.मी. लम्बे तथा 1 मि.मी. मोटे पीले सफेद रंग के होते है इनके अंडे 0.3 मि. मी. लम्बे चमकदार अंडाकार तथा पीले रंग के होते है अंडे पकने के समय भूरे तथा काले होते है। इनके निम्फ चमकदार, अंडाकार पीले रंग के 0.31 मि. मी. लम्बे होते है पूर्ण विकसित होने पर लगभग 2 मि.मी. लम्बे होते है। कर्मीकोष चपटा, अंडाकार तथा स्लेटी रंग के होते हैं एवं आकर में निम्फ से बड़े होते हैं।

3. जैसिड कीट की पहचान :– इस कीट के वयस्क लगभग 2.6 मि. मी. इंच लम्बे और पतले

होते हैं। यह हरे रंग के होते हैं जिसमे सिर के दोनों ओर एक विशिष्ठ काला धब्बा होता है और झिल्लीदार पंख पारदर्शी और इंदरधनुषी होते हैं। जैसिड *अमरास्का बिगुटुला बिगुटुला* भिंडी के सबसे गंभीर कीटो में से एक हैं। यह पतियों के नीचे से रस चूसता है और यह तिरछा चलता है।

4. रेड कॉटन बग की पहचान :–

इसके कीट वयस्क की लम्बाई 12–13 मि.मी. तक होती है और ये अलग तरह के लाल नारंगी रंग के होते है। सिर एक सफेद पट्टे के साथ लाल रंग का होता है, पेट काला होता है और आगे के पंख में दो काले बिन्दुं होते है इसके नर मादा से छोटे होते हैं। मादाए मेजबान पौधों के पास मिट्टी में एक समय में 130 चमकदार पीले अंडे दे सकती है। अंडे देने के 7 दिनों के बाद, कीटडिंब बाहर निकलते है और भोजन शुरू कर देते है। जलवायु के आधार पर विकास की अवधि कुल मिलाकर 50–90 दिनों तक रहती है। संक्रमण मौषम के अंत में होता है।

समन्वित कीट नियंत्रण के उपाय :–

- कर्षण क्रिया द्वारा नियंत्रण
- यांत्रिक नियंत्रण
- जैविक नियंत्रण
- रासायनिक नियंत्रण

• कर्षण क्रिया द्वारा नियंत्रण :–

क्षतिग्रस्त पौधों के तनो तथा फलो को एकत्रित करके नष्ट कर देना चाहिए। गर्मियों में गहरी जुताई करके इनके अंडो को नष्ट किया जा सकता है और फसल चक्र के द्वारा भी कीटों का नियंत्रण किया जा सकता है।

• यांत्रिक नियंत्रण :–

तना तथा फल भेदक कीटों को पकड़कर नस्ट किया जा सकता है। फल छेदक की निगरानी के लिए 5 फेरोमोन ट्रैप प्रति हेक्टेयर लगायें। यांत्रिक ट्रैप के द्वारा जैसे पीला ट्रैप लाइट ट्रैप द्वारा के सफेद मक्खी, एफिड तथा फल छेदक कीटों का नियंत्रण किया जा सकता है।

• जैविक नियंत्रण :–

फल छेदक के नियंत्रण के लिए ट्राइकोग्रामा चीलोनिस 1 लाख प्रति हैक्टेयर की दर से 2–3 बार उपयोग करे। स्यूडोमोनास स्पीसीज 2 किलो प्रति एकड़ बीज/नर्सरी को उपचारित करे।

• रासायनिक नियंत्रण :–

साइपरमैथरीन 0.0125 प्रतिशत के प्रयोग से तना व फल भेदक का नियंत्रण किया जा सकता है एसीटामिप्रिड का प्रयोग सफेद मक्खी के नियंत्रण में किया जाता है। सफेद मक्खी के लिए औक्सिमिथाइल डेमेटान 25 प्रतिशत ई.सी. की 5 मि.ली. मात्रा प्रति लीटर पानी में मिलाकर छिड़काव करे एवं आवश्यक्तानुसार छिड़काव को दोहराए।